Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 08, No. 01, January, 2018, pp. 559-564

केन्द्रीय विद्यालयों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति के सन्दर्भ में अध्यापक, अभिभावक एवं छात्रों की भूमिका

पिंकी मीना*
डॉ. सुलेखा पारीक**

सार

विगत कुछ वर्षो से परीक्षा सुधार कार्यक्रम के रूप में सतत् एवं व्यापक मूल्याकंन पद्वति का विचार शैक्षिक जगत में चर्चा का विषय रहा है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रत्यय वस्तुतः परीक्षा सुधार के दो सिद्वान्तो पर आधारित है प्रथम जो व्यक्ति अध्यापन कार्य करें, वही व्यक्ति मूल्यांकन भी करें तथा द्वितीय मूल्यांकन कार्य सत्रंत में न होकर सम्पूर्ण सत्र के दौरान लगातार होता रहे। शिक्षण के उपरान्त मूल्यांकन ही एक ऐसा उपकरण है जो अधिगम की वैधता को स्थापित करता है। मूल्यांकन के विविध प्रकारो में से एक है सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी0सी0ई0) विद्यार्थियों का लगातार अंतराल पर मूल्यांकन उनकी अधिगम दक्षता एवं प्रतिपुष्टि के लिए बेहद जरूरी है। इस पद्वति को और अधिक, बेहतर बनाने में अध्यापक, अभिभावक एवं छात्रो की भूमिका कैसी हो, विद्यालयों का स्वरूप इस परिप्रेक्ष्य में कैसा होना चाहिए इस पद्वति के क्या क्या लाभ है, विद्यार्थीयों के मूल्यांकन में शैक्षिक निष्पादन पद्वति कैसी होती है। उक्त आलेख में निम्न पहलूओं पर प्रकाश डाला गया है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) से अभिप्राय

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी0सी0ई0) से अभिप्राय एक ऐसी नियमित–निरन्तर और व्यापक मूल्यांकन पद्वति से है जिसमें विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के सभी पक्षों को सम्मिलित किया गया हो। सत्त से अभिप्राय नियमित मूल्यांकन इकाई परीक्षणों की आवृत्ति अधिगम प्रक्रिया के अतंरालो का विश्लेषण, संशोधन के उपाय पुनर्परीक्षण तथा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को स्वमूल्यांकन के लिए जानकारी प्रदान करना है। व्यापक से अभिप्राय विद्यार्थी के विकास के दोनो अर्थात शैक्षिक एवं सह शैक्षिक पक्षो को सम्मिलित करना है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया विगत कई वर्षो से चल रही है विद्यार्थी किस क्षेत्र में कैसा प्रदर्शन कर रहा है ? उसकी उपलब्धियों के आधार पर आकलन किया जाता है। सामान्य दैनिक गतिविधियों और क्रियाकलापों को प्रभावी ढंग से शिक्षा की प्रक्रिया के आकलन के काम में लाया जाता है। प्रत्येक विषय का आकलन दक्षताओं एवं कौशलों के आधार पर किया जाता है। पढ़ाई में सुधार के लिए शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर विद्यार्थी का मूल्यांकन किया जाता है। जिसमें प्रत्येक बच्चे को सीखने के अवसर प्रदान किए जाते है। अपने अनुभव एवं क्षमता के अनुसार स्वयं करके सीखने की प्रक्रिया को प्रायः कक्षाओं में विशेष स्थान दिया गया है। उनके प्रयोगो के आधार पर लगातार और विस्तृत मूल्यांकन ही एक मात्र सार्थक मूल्यांकन है। जिसमें विद्यार्थी की गुणवत्ता का आकलन समय–समय पर किया जाता है।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने शिक्षा प्रणाली में सुधार एवं सुदृढ़ता लाने हेतु मूल्यांकन के लिए सी.सी.ई. पद्वति अक्टूबर, 2009 से कक्षा नौ एवं दस में लागू की। इस पद्वति में कक्षा नौ एवं दस के विद्यार्थियों के अधिगम को

* शोद्यार्थी, शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोध निर्देशिका (व्याख्याता), शिक्षा विभाग, श्री स्वरूप गोविन्द पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के माध्यम से विद्यालय में ही मूल्यांकन किया जाएगा न कि किसी अन्य बाहरी परीक्षा के द्वारा यह सर्वविदित है कि सी0सी0ई0 पद्धति लागू होने से पहले विद्यार्थी का मूल्यांकन कक्षा दस में वर्ष के अन्त में बोर्ड परीक्षा के द्वारा होता था किन्तु अब सी.सी.ई. पद्वति के माध्यम से मूल्यांकन लगातार पूरे वर्ष शैक्षिक एवं सहशैक्षिक क्षेत्रों एवं गतिविधियों में विद्यार्थियों के निष्पादन के आधार पर होता है। विद्यार्थी का मूल्यांकन कक्षा नौ एवं दस में शैक्षिक निष्पादन के आधार पर निम्न प्रक्रियानुसार होता है। यह मूल्यांकन तीन भागो में होता है:–

(क) **फारमेटिव (रचनात्मक) मूल्यांकनः** इसके अन्तर्गत शिक्षक विद्यार्थी के विकास का सकारात्मक वातावरण में मूल्यांकन करेगे। इस मूल्यांकन में लिखित परीक्षा के स्थान पर विविध गतिविधियों से विद्यार्थी का मूल्यांकन किया जाता है जिसमें प्रश्नोत्तरी, साक्षात्कार दृश्य परीक्षण, मौखिक परीक्षण, परियोजना तथा प्रयोग शामिल है।

(ख) **समेटिव (संकलित) मूल्यांकनः** यह मूल्यांकन लिखित परीक्षा के रूप में प्रत्येक विद्यालय द्वारा प्रत्येक सत्र के अंत में आयोजित किया जाता है। परीक्षा में स्तर एवं एकरूपता बनाए रखने की दृष्टि से केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड प्रश्न बैंक, समाधान और अंक योजना विद्यालयों को उपलब्ध कराता है। इस मूल्यांकन प्रक्रिया का समय–समय पर बोर्ड के अधिकारियों द्वारा निरीक्षण भी किया जाता है।

- इस प्रकार एक वर्ष में दो सत्र होते है। प्रत्येक सत्र में दो रचनात्मक (फारमेटिव) और एक संकलित (समेटिव) मूल्यांकन के आधार पर विद्यार्थियों के निष्पादन को जॉचा जाता है। मूल्यांकन का आधार अंक न होकर श्रेणी (ग्रेड) होता है।

कक्षा	सत्र	मूल्यांकन का प्रकार	शैक्षिक सत्र में प्रतिशत संभार	सत्रानुसार संविभाजन	कुल वार्षिक प्रतिशत
नौ	प्रथम सत्र (अप्रेल से सितम्बर)	एफ.ए.–1	10%	एफ.ए.–1+2=20%	फारमेटिव 40%
		एफ.ए.–2	10%		
		एस.ए.–2	20%	एस.ए.–1=10%	
	द्वितीय सत्र (अक्टूबर से मार्च)	एफ.ए.–3	10%	एफ.ए.–3+4=20%	समेटिव 60% Total = 100
		एफ.ए.–4	10%		
		एस.ए.–2	40%	एस.ए.–2=40%	
दस	प्रथम सत्र (अप्रेल से सितम्बर)	एफ.ए.–5	10%	एफ.ए.–5+6=20%	फारमेटिव 40%
		एफ.ए.–6	10%		
		एस.ए.–3	20%	एस.ए.–3=20%	
	द्वितीय सत्र (अक्टूबर से मार्च)	एफ.ए.–3	10%	एफ.ए.–7+8=20%	समेटिव 60% Total = 100
		एफ.ए.–4	10%	एस.ए.–4=40%	
		एस.ए.–2	40%		

सह – शैक्षिक क्षेत्रों जिनमें जीवन कौशल, दृष्टिकोण एवं मूल्य–बोध का मूल्यांकन किया जाता है। पॉच–बिन्दुओं के आधार पर जीवन –कौशलों और तीन बिन्दुओं के आधार पर दृष्टिकोण एवं मूल्य बोध आंका जाता है।

सह – शैक्षिक क्रियाकलापों में भाग लेने के आधार पर विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है। इसके अंतर्गत पुस्तकालय, वैज्ञानिक, सौन्दर्यपरक गतिविधियों, गोष्ठियों में भागीदारी तथा शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा को आधार बनाया गया है। तीन बिन्दुओं के आधार पर इन सभी क्षेत्रों को श्रेणीकृत किया गया है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के परिप्रेक्ष्य में विद्यालय का स्वरूप

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन दरअसल सीखने–सिखाने या ये कहे की शिक्षक व्यवस्था में आमूल–चूल बदलाव की बात है। यह सिर्फ मूल्यांकन प्रक्रिया की बात नहीं करता बल्कि यह विद्यालय को उस उत्तरदायित्व को पूरा करने का अवसर देता है जिसके लिए विद्यालय नामक संस्था की संकल्पना की गई है। अतः सतत् एवं व्यापक

मूल्यांकन लागू करना एक समग्र दृष्टि की अपेक्षा करता है। एक विद्यालय को इस व्यवस्था को समग्रता में अपनाना होगा और विद्यालय की सभी प्रक्रियाएं इसकी पूरक के रूप में होंगी इसके लिए:

- शिक्षकों को अपनी शिक्षण योजना में बदलाव करना होगा।
- पाठ्यक्रम का प्रबन्धन इन प्रकार करना होगा। कि दक्षताओं पर समग्रता के साथ काम किया जाए।
- बच्चों का नियमित मूल्यांकन करना होगा।
- कक्षा प्रबन्धन एवं समय प्रबन्धन को बच्चों के मूल्यांकन के आधार पर लचीला बनाना होगा।
- विद्यालय में मूल्यांकन के उपकरणों और तरीकों में बदलाव करना होगा।
- प्रधानाध्यापक को नियमित रूप से शिक्षकों के साथ सी0सी0ई0 के क्रियान्वयन की प्रगति की समीक्षा करनी होगी और आवश्यकता पड़ने पर शिक्षको को सहयोग देना होगा। यदि आवश्यकता हो तो बाहर से भी सहयोग लेना होगा।
- शिक्षण अधिगम सामग्री इस तरह तैयार करनी होगी जो कि अंततः बच्चो को ज्ञान के सृजन के अवसर देती हों।
- बच्चों की प्रगति को दर्ज करने के ऐसे तरीके अपनाने होगे जो बच्चों के बारे में शिक्षा के उद्देश्यों के परिपेक्ष्य में जानने आवश्यक हों।

केन्द्रीय विद्यालयों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्वति के संदर्भ में अध्यापक की भूमिका

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्वति में अध्यापक की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में तीन काम किए जाते है। पहला यह देखना कि बच्चों ने क्या वही सीखा है जो कि उन्हें सीखना चाहिए ? दूसरा उनके सीखने की गति प्रगति क्या है ? और तीसरा ये की उनकी सतत् उपलब्धि क्या है ? और इन तीनो कार्यो को सफल बनाने के लिए आवश्यक है कि अध्यापक निम्न बातों का अध्ययन रखे।

देखे की बच्चों का शैक्षिक स्तर क्या है ? कक्षा में बच्चों के समूह किस प्रकार बन सकते है ? किस बच्चें को किस समूह में रखा जा सकता है या रखा जाना है ? शिक्षण योजना किस तरह की हो कि बच्चों के स्तर के अनुसार प्रत्येक बच्चे को सीखने के समान अवसर उपलब्ध हो और वो अपनी योग्यता के अनुरूप सीख सके और अपनी क्षमताओ में लगातार वृद्धि कर सके। इसके लिए आवश्यक है कि अध्यापक स्तर पहचान के लिए इस प्रकार के प्रश्न पत्र बनाए कि बच्चों के सही स्तर की पहचान हो सकें। यह ध्यान रहे कि बच्चों का सही स्तर पहचान किया जाना अतिआवश्यक है।

- अध्यापक यह देखे की जो विषय वस्तु बच्चे को सीखनी थी वो सीखी या नही इसे समय–समय पर दर्ज करें। कुछ समय वाद पाठयक्रय के आधार पर बच्चे की प्रगति का मूल्यांकन करें। यह काम बच्चे के द्वारा किए गए विभिन्न तरह के कार्यो के अवलोकन के माध्यम से किया जा सकता है जैसे बच्चों का कक्षा कार्य या गृह कार्य बच्चों द्वारा समूह पत्र पर किया गया कार्य, बच्चों द्वारा अभ्यास पत्रक पर किया गया कार्य, बच्चो के द्वारा गतिविधियों के दौरान की गई टिप्पणियां।
- अध्यापक यह भी देखे कि बच्चे किस तरह से सीख रहे है। जैसे कि बच्चो के सीखने के तरीके क्या है ? वह किसह तरीके से आसानी से सीख रहा है सीखने के तरीके में क्या किसी बदलाव की गुंजाईश है ? अध्यापक इन सभी बातों को अपनी डायरी में अपने अनुसार लिख ले ताकि बाद में उस बच्चें के बारे में लिखते समय यह टिप्पणी काम आ सके। क्योंकि एक अध्यापक के लिए सभी बातो को याद रखना संभव नही है। अतः अध्यापक को स्वयं की मदद के लिए यह दर्ज करते रहना चाहिए ताकि वह बच्चे को आसानी से आगे सीखाने में मदद कर सके।
- एक विषय के अध्यापक को दुसरी विषय के अध्यापको से भी नियमित रूप से चर्चा करनी चाहिए और बच्चों की अन्य विषयों में प्रगति को भी देखते रहना चाहिए। ऐसा इसलिए आवश्यक है क्योंकि एक अध्यापक के लिए यह जानना आवश्यक है कि बच्चों का रूझान क्या है और उनके साथ किस प्रकार का काम किये जाने की आवश्यकता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्वति के संदर्भ में अभिभावकों की भूमिकाः

- अभिभावकों की मुख्य भूमिका इस पद्वति में यह हो सकती है कि वे इस पद्वति को सही ढंग से समझे व इससे होने वाले बच्चें के सर्वांगिण विकास में सहयोग करें ताकि बच्चा बिना रूकावट निरन्तर आगे बढ सकें।

- अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चे को अधिक समय दे तथा विद्यालय में करायी जाने वाली गतिविधियों को बच्चों से पूछे व उनकी सही ढंग से करने में मदद करे जिससे बच्चा इस पद्वति को बोझ न समझे और अधिक रूचि के साथ सीखने की कोशिश करें।
- जितना उत्तरदायित्व शिक्षक का होता है उससे कई अधिक उत्तरदायित्व अभिभावकों का होता है बच्चो का गुणात्मक व सृजनात्मक शिक्षा देने में अभिभावको को इस पद्वति को सुचारू रूप से चलाने में शिक्षक की मदद करते रहना चाहिए।
- समय–समय पर विद्यालय जाकर विषय अध्यापको से इस पद्वति के बारे में जानकारी लेते रहना चाहिए ताकि अभिभावक इस पद्वति का महत्त्व समझते हुए बच्चो को प्रोत्साहित कर सकें।
- अभिभावको को चाहिए की वे पढ़ने–पढाने व मूल्यांकन के इस नये तरीके की वजह से बच्चो में आ रहे व्यवहार एवं कार्य में आ रहे परिवर्तनों की गुणवक्ता को सराहे व प्रोत्साहित करें।

सतत् एंव व्यापक मूल्यांकन पद्धति के संदर्भ में छात्रों की भूमिकाः

- छात्र कक्षाकक्ष में गतिविधि आधारित अधिगम प्रक्रिया एवं सीखने–सिखानें की इस प्रक्रिया में कला, संगीत और खेलों को पर्याप्त महत्त्व मिलने लगा है। इसमें अपनी रूची अनुसार अधिक से अधिक सहयोग प्रदान कर सकते है।
- छात्र अधिक रूचि पूर्ण सिखने की इस पद्धति में अध्यापक का सहयोग प्रदान करे ताकि अध्यापक भी पूर्ण रूची से सीखाने में खुशी महसूस कर सके।
- शिक्षक द्वारा रचनात्मक मूल्यांकन के समय सकारात्मक वातावरण बना रहे छात्र इसमें अपना सहयोग प्रदान कर सकते है।
- छात्र इस पद्धति को बोझ न समझे बल्कि सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया में शिक्षक व विद्यालय को पूर्ण सहयोग प्रदान करे व इस पद्धति (सी0सी0ई0) में कराई जाने वाली प्रत्येक गतिविधि में रूची से भाग लेते रहे।
- सी0सी0ई0 पद्धति छात्रों को अंको के भ्रमजाल से निकालने की एक पद्धति है ताकि छात्रों को अंको की आपाधापी से बाहर निकाला जा सके। इस पद्धति की ग्रेडिंग प्रणाली को सहजरूप से स्वीकार करें।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्वति के प्रभावी क्रियान्वयन में छात्र अपना आत्म – समार्थ्य प्रस्तुत करके भी सहयोग प्रदान कर सकते है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के लाभः

- सम्पूर्ण अधिगम प्रक्रिया को एक की परीक्षा के स्थान पर 12 मूल्यांकनों के माध्यम से आंका जाता है। इस प्रकार विद्यार्थी का वास्तविक मूल्यांकन संभव हो पाता है। किसी एक मूल्यांकन का प्रभाव सम्पूर्ण मूल्यांकन पर नहीं पड़ता।
- इस पद्धति में न केवल शैक्षिक अपितु सह–शैक्षिक क्षैत्रों एवं गतिविधियों को भी जाँचा जाता है।
- इस पद्धति के द्वारा विद्यार्थियों में अधिगम के प्रति लगाव बढ़ता है।
- इसके द्वारा विद्यार्थियों में उन जीवन–कौशलों को विकसित करना संभव होता है जो सृजनात्मक और संतोषप्रद जीवन के लिए आवश्यक है।
- यह पद्धति विद्यार्थियों को परीक्षा के तनाव व भय से मुक्त रखने में सहायक सिद्ध हुई है।
  - विषयवस्तु को छोटे अंशों में विभक्त करके नियमित अधिगम प्रक्रिया की जाँच की जा सकती है।
  - विभिन्न विद्यार्थियों की विविध अधिगम आवश्यकता और क्षमता के अनुसार विविध उपायों पर आधारित होने के कारण यह शिक्षा पद्धति अधिक प्रभावशाली है।
  - इस पद्धति के द्वारा अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थि सक्रिय रूप से भाग लेते है।
- जो विद्यार्थी शैक्षिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन नहीं कर पाते किन्तु सह–शैक्षिक क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन कर सकते है, उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है और उनकी क्षमताओं को पहचानने का प्रयास किया जाता है।

- विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान नियमित रूप से सत्र के आरंभ से ही विभिन्न प्रकार के सुधार–उपायों द्वारा किया जाता है। किन्तु इस पद्धति का यह आशय नहीं निकाला जाना चाहिए कि इसमें विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धियों को कम किया जाएगा। अब विद्यार्थियों को शैक्षिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन तो करना ही होगा साथ ही वे जीवन–कौशल, विचार–कौशल एवं भाव–कौशल के माध्यम से अतिरिक्त कौशलों का विकास करके जीवन की परिस्थितियों का अधिक परिपक्वता से सामना करने में सक्षम बनाता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के विस्तार में प्रयुक्त की जाने वाली सामग्रीः

- **स्त्रोत पुस्तिकाः** सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया पर बेहतर समझ बनाने एवं शिक्षक को कक्षा–कक्ष में कार्य करने के दौरान आने वाली चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक शिक्षक को कक्षा एवं विषयवार स्त्रोत पुस्तिका दी जाती है।
- **व्यापक शिक्षण एव सतत् आकलन पंजिकाः** सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में प्रत्येक बच्चे का मूल्यांकन दर्ज किया जाता है। इस पंजिका में कक्षा एवं विषय से सम्बन्धित पाठ्यक्रम कार्य योजना, समीक्षा एवं सतत् आकलन चैकलिस्ट शामिल है।
- **विद्यार्थी मूल्यांकन प्रगति प्रतिवेदनः** इसमें विद्यार्थियों के अधिगम, प्रगति का अंकन विषयवार योगात्मक मूल्यांकन के द्वारा किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन का आधार प्रति दो माह में किये गये सतत् आकलन के आधार पर प्रत्येक विद्यार्थी के अधिगम के सम्बन्ध में उपलब्धि होगी।
- **कार्यपत्रकः** बच्चों को सीखने–सिखाने की गतिविधि में पर्याप्त अभ्यास की आवश्यकता होती है। एक शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वो समय–समय पर बच्चों को सिखाई गई अवधारणा पर अभ्यास कार्य देते रहें। इसे ध्यान में रखते हुए प्रत्येक कक्षा एवं प्रत्येक अवधारणा पर अभ्यास के लिए कार्य पत्रकों का निर्माण शिक्षकों के द्वारा किया जाता है। तथा इन कार्य पत्रकों पर बच्चों द्वारा काम करने के बाद इन्हें उनके पोर्टफोलियों में एवीडेन्स के तौर पर शिक्षकों द्वारा सकारात्मक टिप्पणी देकर लगाया जाता है। इन कार्यपत्रकों को तैयार करने के लिए मासिक कार्यशालाओं में कार्य किया जाता है।
- **पोर्टफोलियों फाईलः** सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों का मूल्यांकन करने के लिए शिक्षक के पास पर्याप्त साक्ष्य होने चाहिए। इसके लिए बच्चों के द्वारा किए गए कामों को संकलित किया जाता है। बच्चों के बेहतरीन कार्य को रखने के लिए एक फाईल बनाई जाती है। इस फाईल को ही पोर्टफोलियो फाईल कहते है। प्रत्येक बच्चे के लिए एक फाईल रखी जाती है।
- **आर्टकिटः** मूल्यांकन की व्यापकता के लिए आवश्यक है कि बच्चों को कला पर काम करने के अवसर मिले। इसके लिए जरूरी है कि विद्यालय में सामग्री उपलब्ध हो। कलर पेपर, ग्लेज पेपर, स्कैच पैन, ड्राईंगशीट, फेवीकोल, पेन्सिल रबर एवं धागे की एक रील बच्चों को उपलब्ध करवाई जाए।

विशिष्ट शब्दों का परिभाषिकरणः

- **सतत् एवं व्यापक मूल्यांकनः** सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन बच्चों की बुद्धि और विकास के समस्त क्षेत्रों का निरन्तर एवं नियमित आंकलन है जिसके द्वारा विभिन्न विधियों एवं उपकरणों के माध्यम से बच्चो का आकलन किया जाता है।
- **आकलनः** दैनिक गतिविधियों और अभ्यास के उपयोग से आंकलन करना।
- **मूल्यांकनः** एक व्यापक व्यवस्थित तथा सोद्देश्य प्रक्रिया है जो समग्र मानवीय क्षमताओं तथा उनकी सीमाओं के बारे में उपयोगिता की दृष्टि से व्यक्ति के व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए वस्तुनिष्ठ निर्णय देती है।
- **पाठ्यक्रमः** लैटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है ''मार्ग या रास्ता'' जो व्यक्ति अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपनाता है। पाठ्यक्रम निर्देशात्मक एवं शिक्षाप्रद कार्यक्रम है जिसके द्वारा विद्यार्थी अपने लक्ष्य आदर्श एवं जीवन की आकांक्षाए प्राप्त कर सकते है।

- **एन.सी.ई.आर.टी.: (नेशनल काउन्सिल ऑफ एजूकेशन एण्ड रिसर्च ट्रेनिंग)** राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद 1961 में इस संस्थान को एक स्वतंत्रत संगठन के रूप में नई दिल्ली में स्थापित किया गया। इसका प्रमुख कार्य शिक्षा सुधार के लिए प्रयास करना है।
- **केन्द्रीय विद्यालयः** दिल्ली में केन्द्रीय विद्यालय का संगठन का आयुक्त होता है जो मानव संसाधन मंत्रालय के अधिन कार्य करता है। इन विद्यालयों को नियंत्रण अनुदान और मान्यता मानव संसाधन मंत्रालय भारत सरकार के अधीन है और इसके स्कूल सी.बी.एस.ई. (CBSE) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबंधित है।
- **संज्ञानात्मक क्षेत्रः** जो बच्चे के मानसिक विकास में सहायता करते है।
- **सह – संज्ञानात्मक क्षेत्रः** वे क्षेत्र जिनके माध्यम से बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक एवं संवेगात्मक विकास होता है।
- **उपचारात्मक शिक्षणः** शिक्षक कक्षा अधिगम प्रक्रिया के दौरान अवलोकन कर, प्रश्न पूछकर, चर्चाकर, कापियों को देखकर यह पता करता है किन–किन क्षेत्रों में विद्यार्थी सीख नहीं पा रहा है। यदि सीख नही पा रहा है तो क्या करण है। शिक्षक बच्चों के न सीख पाने के कारणों को जानने का प्रयास करता है समझता है तदुपरान्त उपचारात्मक शिक्षण देता है।
- **उपकरणः** उपकरण का तात्पर्य उन गतिविधियों से है जिसका उपयोग लिखित कौशलों के आकलन के लिए करते हैं –जैसे – मोखिक कार्य, लिखित कार्य, प्रोजेक्ट आदि।
- **अवलोकनः** अवलोकन के द्वारा बच्चों के विषय ज्ञान एवं व्यवहारिक ज्ञान का मूल्यांकन किया जाता है। सह संज्ञानात्मक क्षेत्र के मूल्यांकन में अवलोकन का महत्त्वपूर्ण स्थान है।
- **पोर्टफोलियोंः** पोर्टफोलियों बच्चें के समग्र व्यक्तित्व का आकलन है। पोर्टफोलियों एक फाइल होती है जिसका निर्माण बच्चे स्वयं करते है। इसमें बच्चे द्वारा किए गए उन कार्यो का संग्रह होता है जिसे कक्षा शिक्षक द्वारा आवश्यकतानुसार कराया जाता है।
- **सर्वेः** सर्वे के माध्यम से आंकड़ो को प्राप्त करते है जिसका उपयोग विभिन्न प्रकार की योजनाओं के लिए तथा समस्या सुलझाने के लिए किया जाता है।
- **प्रोजेक्टः** इसमें सर्वे द्वारा प्राप्त आंकड़ो का उपयोग किसी कार्य के पूर्ण होने में करते है। प्रोजेक्ट कार्य में निष्कर्ष तक स्वयं खोज कर पहुँचना होता है यह उद्देश्य पूर्ण होती है।
- **खुली पुस्तकः** मूल्यांकन में खुली पुस्तक का उपयोग मुख्य रूप से भाषायी दक्षताओं की जाँच के लिए किया जाता है जैसे – कोई भी पृष्ठ देखकर उसमें लिंग, वाक्यों के प्रकार, विशेषण, मुहावरे आदि लिखना।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- एन0सी0ई0आर0टी0 (2001) : ''विद्यालय में ग्रेड प्रणाली'', नयी दिल्ली।
- एन0सी0ई0आर0टी0 (2006) : ''राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005'' नयी दिल्ली।
- अग्रवाल, जे0सी0 (2007) : ''भारत में शिक्षा व्यवस्था का इतिहास,'' शिप्रा प्रकाशन नई दिल्ली।
- लोढ़ा, जितेन्द्र कुमार (2009) : ''शिक्षा में गुणवत्ता का चिंतन'', दर्पण।
- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, (2010) : ''सतत् एवं व्यापक मूल्याकन शिक्षक संदर्शिका'', कक्षा नौ और दस एन0सी0ई0आर0टी0 2012 आकलन स्त्रोत पुस्तिका।
- गर्ग, सुरजमल (2010) : ''आंकलन की नई पद्वति ग्रेडिग सिस्टम'', N.C.E.R.T. नई दिल्ली।
- कुमार, अनुज (जुलाई 2012) : ''सतत् एवं व्यापक मूल्याकन चुनौतियाँ और संभावनाये'' पत्रिका आधुनिक भारतीय शिक्षा N.C.E.R.T. नई दिल्ली।
- सिंह, मिलन (2013) : ''सतत् एवं समग्र मूल्यांकन'' जर्नल्स प्राथमिक शिक्षक N.C.E.R.T. नई दिल्ली।
- वर्मा, रूचि (अप्रैल–जुलाई 2015 संयुक्तांक) : ''अंको की आपाधापी में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी0सी0ई0) की किरण'' जर्नल्स प्राथमिक शिक्षक N.C.E.R.T. नई दिल्ली।
- सिन्हा, सची (2015–16) : ''सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन एक सटीक कदम'' पत्रिका प्राथमिक शिक्षक N.C.E.R.T. नई दिल्ली।